UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 1 | January - March 2017

# भारत की सीमा सुरक्षा चुनौतियों और शमन रणनीतियों के रणनीतिक विश्लेषण का अध्ययन

**डॉ दीप कुमार श्रीवास्तव**

**एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग**
**एसएम कॉलेज चंदौसी**

**सार**

भारत, अपनी व्यापक और विविध सीमाओं के साथ, बहुआयामी सुरक्षा चुनौतियों का सामना करता है जो राष्ट्रीय अखंडता और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण खतरा पैदा करती हैं। यह अध्ययन भारत की सीमा सुरक्षा चुनौतियों का रणनीतिक विश्लेषण करता है, जिसमें सीमा पार आतंकवाद, तस्करी, अवैध आप्रवासन और भू-राजनीतिक तनाव जैसे प्रमुख खतरों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अनुसंधान मौजूदा सीमा सुरक्षा उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है और उन्नत तकनीकी समाधान, बुनियादी ढांचे के विकास, नीति सुधार और सामुदायिक भागीदारी को अपनाने सहित नवीन शमन रणनीतियों का प्रस्ताव करता है। मिश्रित-तरीकों के दृष्टिकोण को नियोजित करके, गुणात्मक डेटा को मिलाकर, इस अध्ययन का उद्देश्य भारत में सीमा सुरक्षा की जटिलताओं की व्यापक समझ प्रदान करना है।

**मुख्य शब्द:** सुरक्षा, चुनौति, शमन, रणनीतिक, सीमाएँ इत्यादि।

**प्रस्तावना**

भारत के भू-राजनीतिक परिदृश्य की विशेषता इसकी व्यापक सीमाएँ हैं, जो 15,000 किलोमीटर तक फैली हुई हैं और सात देशों के साथ साझा की जाती हैं: पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार और अफगानिस्तान (पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के माध्यम से)। ये सीमाएँ विभिन्न प्रकार के भूभागों से होकर गुजरती हैं, जिनमें ऊँचाई वाले पहाड़, घने जंगल, रेगिस्तान और नदी प्रणालियाँ शामिल हैं। इन सीमाओं की विविधतापूर्ण और चुनौतीपूर्ण प्रकृति अद्वितीय सुरक्षा चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है जो ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक कारकों से जटिल होती हैं। भारत में सीमा सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो राष्ट्रीय अखंडता और क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करता है। भारत की सीमाओं के लिए प्राथमिक खतरों में सीमा पार आतंकवाद, हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी, अवैध आप्रवासन और पड़ोसी देशों के साथ भू-राजनीतिक तनाव शामिल हैं। आतंकवादियों की घुसपैठ, विशेष रूप से पाकिस्तान के साथ नियंत्रण रेखा (एलओसी) और चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर, राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करती है। इसके अतिरिक्त, बांग्लादेश और म्यांमार के साथ खुली सीमाएँ अवैध प्रवासन और तस्करी गतिविधियों को सुविधाजनक बनाती हैं, जिससे सुरक्षा परिदृश्य और जटिल हो जाता है। भारत सरकार ने इन चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न रणनीतियाँ लागू की हैं, जिनमें भौतिक बाधाएँ, उन्नत निगरानी प्रौद्योगिकियाँ और पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग शामिल हैं। हालाँकि, खतरों की गतिशील प्रकृति के लिए

इन रणनीतियों के निरंतर मूल्यांकन और अनुकूलन की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारत की सीमा सुरक्षा चुनौतियों का व्यापक विश्लेषण करना और मौजूदा उपायों की प्रभावशीलता का आकलन करना है। इसके अलावा, यह नवीन और टिकाऊ शमन रणनीतियों का प्रस्ताव करना चाहता है जो तकनीकी प्रगति, नीति सुधार और सामुदायिक जुड़ाव का लाभ उठाती हैं।

**भारत की सीमा सुरक्षा के लिए प्रमुख खतरे**

भारत की सीमा सुरक्षा को विभिन्न क्षेत्रों में प्रकृति और तीव्रता में भिन्न-भिन्न खतरों से चुनौती मिलती है। ये खतरे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करते हैं और प्रभावी शमन रणनीतियों को विकसित करने के लिए एक सूक्ष्म समझ की आवश्यकता होती है। प्राथमिक खतरों में शामिल हैं:

**सीमा पार आतंकवाद:**

- **घुसपैठ:** आतंकवादी घुसपैठ, विशेष रूप से पाकिस्तान के साथ नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर, लगातार खतरा बनी हुई है। विभिन्न आतंकवादी समूह भारत में घुसपैठ करने और हमलों को अंजाम देने के लिए ऊबड़-खाबड़ और खुले इलाकों का उपयोग करते हैं।
- **उग्रवादी गतिविधियाँ:** पड़ोसी देशों, विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर जैसे क्षेत्रों में आतंकवादी समूहों की उपस्थिति, सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाती है। इन समूहों को अक्सर राज्य और गैर-राज्य अभिनेताओं से समर्थन प्राप्त होता है, जिससे आतंकवाद विरोधी प्रयास जटिल हो जाते हैं।

**तस्करी और अवैध व्यापार:**

- **हथियार और नशीले पदार्थ:** सीमाओं के पार, विशेषकर पाकिस्तान और म्यांमार से हथियारों, गोला-बारूद और नशीले पदार्थों की तस्करी, भारत के भीतर विद्रोह और आपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा देती है। गोल्डन ट्राएंगल क्षेत्र भारत में नशीले पदार्थों की तस्करी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- **मानव तस्करी:** जबरन श्रम और यौन तस्करी सहित मानव तस्करी, बांग्लादेश और नेपाल के साथ भारत की सीमाओं पर एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। तस्करों द्वारा अक्सर कमजोर आबादी का शोषण किया जाता है, जिससे गंभीर मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है।

**गैरकानूनी इमिग्रेशन:**

- **अनियमित प्रवासन:** बांग्लादेश और नेपाल के साथ खुली सीमाएँ अनियमित प्रवासन की सुविधा प्रदान करती हैं। अवैध अप्रवासियों की यह आमद स्थानीय संसाधनों पर दबाव डाल सकती है, जनसांख्यिकीय परिवर्तन ला सकती है और कभी-कभी सामाजिक और राजनीतिक तनाव भी पैदा कर सकती है।
- **शरणार्थियों की आमद:** पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता और जातीय संघर्षों के परिणामस्वरूप शरणार्थियों की अचानक आमद हो सकती है, जैसा कि म्यांमार से रोहिंग्या संकट के साथ देखा गया है। शरणार्थी आबादी का प्रबंधन मानवीय और सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

**भूराजनीतिक तनाव:**

- **सीमा विवाद:** चीन और पाकिस्तान के साथ चल रहे सीमा विवाद, विशेष रूप से चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) और पाकिस्तान के साथ एलओसी पर, लगातार झड़पों और सैन्य गतिरोध का कारण बनते हैं। ये तनाव बड़े संघर्षों में बदल सकता है, जैसा कि 2020 में गलवान घाटी में हुई झड़प से पता चलता है।
- **छद्म युद्ध:** भूराजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के परिणामस्वरूप अक्सर छद्म युद्ध होते हैं, जहां पड़ोसी राज्य क्षेत्र को अस्थिर करने के लिए भारत के भीतर विद्रोही समूहों का समर्थन करते हैं। संघर्ष का यह अप्रत्यक्ष रूप सीमा सुरक्षा में जटिलता की एक और परत जोड़ता है।

**विद्रोह और आंतरिक संघर्ष:**

- **पूर्वोत्तर उग्रवाद:** पूर्वोत्तर राज्यों में म्यांमार और बांग्लादेश के तत्वों द्वारा समर्थित विद्रोही समूह, राज्य सत्ता को चुनौती देना जारी रखते हैं। ये समूह सुरक्षा बलों से बचने के लिए कठिन इलाकों और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं का फायदा उठाते हैं।
- **वामपंथी उग्रवाद:** हालांकि मुख्य रूप से एक आंतरिक खतरा है, मध्य और पूर्वी भारत में वामपंथी उग्रवाद अक्सर सीमा सुरक्षा मुद्दों से जुड़ा होता है, खासकर जहां विद्रोही पड़ोसी देशों से शरण या समर्थन चाहते हैं।

**पर्यावरण एवं प्राकृतिक चुनौतियाँ:**

- **विविध भूभाग**: उच्च ऊंचाई वाले पहाड़ों, घने जंगलों और रेगिस्तानों सहित विविध भूभाग, सीमा सुरक्षा बलों के लिए महत्वपूर्ण तार्किक और परिचालन चुनौतियां पेश करते हैं। इन क्षेत्रों में निरंतर और प्रभावी उपस्थिति बनाए रखना कठिन है।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन से प्रेरित घटनाएं, जैसे हिमनदों का पिघलना और नदी में बाढ़, भौतिक परिदृश्य को बदल सकती हैं, जिससे सीमाएं अधिक छिद्रपूर्ण हो जाती हैं और निगरानी के प्रयास जटिल हो जाते हैं।

**तकनीकी खतरे:**

- **साइबर सुरक्षा:** डिजिटल बुनियादी ढांचे पर बढ़ती निर्भरता सीमा सुरक्षा को साइबर हमलों के प्रति संवेदनशील बनाती है। राज्य और गैर-राज्य अभिनेता महत्वपूर्ण प्रणालियों को निशाना बना सकते हैं, जिससे सुरक्षा प्रोटोकॉल का उल्लंघन हो सकता है।
- **ड्रोन और यूएवी:** विरोधियों द्वारा निगरानी और तस्करी के लिए ड्रोन और मानव रहित हवाई वाहनों (यूएवी) का उपयोग नई चुनौतियां पेश करता है। इन प्रौद्योगिकियों का पता लगाने और उन्हें निष्क्रिय करने के लिए उन्नत प्रति उपायों की आवश्यकता होती है।

व्यापक और प्रभावी शमन रणनीति विकसित करने के लिए भारत की सीमा सुरक्षा के प्रमुख खतरों को समझना आवश्यक है। प्रत्येक खतरे के लिए एक अनुरूप दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो तकनीकी नवाचार, मजबूत नीति उपायों, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सामुदायिक जुड़ाव को जोड़ती है। इन चुनौतियों

का समग्रता से समाधान करके, भारत अपनी सीमा सुरक्षा बढ़ा सकता है और राष्ट्र की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित कर सकता है।

**शमन रणनीतियाँ**

भारत की सीमा सुरक्षा के लिए विविध और उभरते खतरों से निपटने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। निम्नलिखित रणनीतियों में सीमा सुरक्षा अभियानों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए तकनीकी, ढांचागत, नीति और समुदाय-आधारित उपाय शामिल हैं।

**तकनीकी समाधान**

- **ड्रोन और यूएवी:** वास्तविक समय की निगरानी और कठिन इलाकों की टोह लेने के लिए ड्रोन और मानव रहित हवाई वाहन तैनात करें।
- **थर्मल इमेजिंग और नाइट विजन:** कम दृश्यता की स्थिति के दौरान घुसपैठियों और अवैध गतिविधियों का पता लगाने के लिए थर्मल इमेजिंग और नाइट विजन प्रौद्योगिकियों का उपयोग करें।
- **पूर्वानुमानित विश्लेषण:** ऐतिहासिक डेटा और पैटर्न के आधार पर संभावित सुरक्षा उल्लंघनों की भविष्यवाणी करने के लिए एआई और एमएल एल्गोरिदम लागू करें।
- **स्वचालित खतरे का पता लगाना**: संदिग्ध गतिविधियों के बारे में सुरक्षा बलों को स्वचालित रूप से पता लगाने और सचेत करने के लिए एआई-संचालित सिस्टम का उपयोग करें।
- **मजबूत साइबर रक्षा**: डिजिटल बुनियादी ढांचे को साइबर हमलों से बचाने के लिए साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल को मजबूत करें।
- **सुरक्षित संचार नेटवर्क**: सुरक्षा बलों के बीच निर्बाध समन्वय के लिए सुरक्षित और एन्क्रिप्टेड संचार नेटवर्क विकसित करें।

**बुनियादी ढांचे का विकास**

- **बाड़ लगाना और दीवारें**: अनधिकृत क्रॉसिंग को रोकने के लिए संवेदनशील क्षेत्रों में मजबूत बाड़ और दीवारें बनाना।
- **सीमा चौकियाँ:** प्रभावी निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया के लिए रणनीतिक स्थानों पर अच्छी तरह से सुसज्जित सीमा चौकियों की स्थापना और रखरखाव करें।
- **सड़क और रेल कनेक्टिविटी**: सुरक्षा कर्मियों और संसाधनों की तीव्र आवाजाही की सुविधा के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क और रेल कनेक्टिविटी को बढ़ाना।
- **संचार टावर:** सुदूर सीमावर्ती क्षेत्रों में निर्बाध संचार सुनिश्चित करने के लिए संचार टावर स्थापित करें।

**प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण**

- **कौशल विकास:** सीमा सुरक्षा कर्मियों को आतंकवाद विरोधी, तस्करी विरोधी अभियानों और उन्नत निगरानी तकनीकों जैसे क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना।

- **सांस्कृतिक संवेदनशीलता**: स्थानीय समुदायों के साथ बातचीत करने और सीमा पार की घटनाओं से निपटने में उनकी प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए सुरक्षा कर्मियों को सांस्कृतिक संवेदनशीलता में प्रशिक्षित करें।
- **संसाधन आवंटन**: सीमा सुरक्षा बलों को आधुनिक उपकरण और प्रौद्योगिकी सहित संसाधनों का पर्याप्त आवंटन सुनिश्चित करें।
- **नियमित अभ्यास और अभ्यास**: उच्च तैयारी स्तर बनाए रखने के लिए अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ नियमित अभ्यास और संयुक्त अभ्यास आयोजित करें।

इन शमन रणनीतियों को एकीकृत करके, भारत अपने सीमा सुरक्षा ढांचे को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है। बुनियादी ढांचे में सुधार, नीति सुधार और सामुदायिक सहभागिता के साथ उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने से एक मजबूत और अनुकूली सुरक्षा वातावरण तैयार होगा। सुरक्षा कर्मियों के लिए निरंतर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण से उभरते खतरों से निपटने की भारत की क्षमता और मजबूत होगी। इन व्यापक उपायों को लागू करने से भारत की सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा।

**निष्कर्ष**

भारत की सीमा सुरक्षा चुनौतियों के अध्ययन से भू-राजनीतिक तनाव, सीमा पार आतंकवाद, तस्करी, अवैध आप्रवासन और विविध इलाकों से प्रभावित एक जटिल और बहुआयामी परिदृश्य का पता चलता है। इन खतरों के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाने के लिए एक रणनीतिक, अनुकूली दृष्टिकोण की आवश्यकता है। मौजूदा उपाय, कई मायनों में प्रभावी होते हुए भी, उभरते खतरों से निपटने के लिए विकसित होने चाहिए। उन्नत निगरानी प्रौद्योगिकियों को अपनाना, बुनियादी ढांचे का विकास, मजबूत नीति सुधार और सामुदायिक भागीदारी जैसी शमन रणनीतियाँ महत्वपूर्ण हैं। इन दृष्टिकोणों को एकीकृत करके, भारत एक लचीला सीमा सुरक्षा ढांचा तैयार कर सकता है जो स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करता है, अपनी आबादी के लिए एक सुरक्षित वातावरण को बढ़ावा देता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. बाजपेयी, के. (2002)। भारत को सुरक्षित करना: रणनीतिक विचार और अभ्यास। मनोहर पब्लिशर्स.
2. चेलानी, बी. (2001)। नई सहस्राब्दी में भारत के भविष्य को सुरक्षित करना। ओरिएंट लॉन्गमैन.
3. दास, एस. टी. (2009)। भारत का सीमा प्रबंधन: दस्तावेज़ चुनें। रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान।
4. गांगुली, एस. (2001)। अनवरत संघर्ष: 1947 से भारत-पाकिस्तान तनाव। कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. घोष, पी.के. (2004)। "दक्षिण एशिया और हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा चुनौतियाँ: प्रतिक्रिया रणनीतियाँ।" सामरिक विश्लेषण, 28(3), 339-361.
6. गुप्ता, ए. (2002)। भारत ने अपनी भूमिका पुनः परिभाषित की। ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन।

7. मुखर्जी, आर. (2003)। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा: वार्षिक समीक्षा 2002। केडब्ल्यू प्रकाशक।
8. मुनि, एस. डी., और चड्ढा, वी. (2006)। एशियाई रणनीतिक समीक्षा 2006। रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान।
9. ओबेरॉय, पी. (2006). निर्वासन और अपनापन: दक्षिण एशिया में शरणार्थी और राज्य नीति। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
10. रमन, बी. (2002)। रॉ के काओबॉयज़: डाउन मेमोरी लेन। लांसर प्रकाशक।